अलख निरंजन आदेश !

॥ चैतन्य शिवगोरक्षनाथाय नमः ॥

श्री गोरक्षनाथ चालीसा

दोहा

गणपति गिरजा पुत्र को सुमिरु बारम्बार ।
हाथ जोड़ बिनती करू शारद नाम आधार ॥

चोपाई

जय जय जय गोरख अविनाशी । कृपा करो गुरुदेव प्रकाशी ॥
जय जय जय गोरख गुण ज्ञानी । इच्छा रूप योगी वरदानी ॥
अलख निरंजन तुम्हरो नामा । सदा करो भक्तन हित कामा ॥
नाम तुम्हारो जो कोई गावे । जन्म जन्म के दुःख मिट जावे ॥
जो कोई गोरख नाम सुनावे । भूत पिसाच निकट नहीं आवे॥
ज्ञान तुम्हारा योग से पावे । रूप तुम्हारा लख्या न जावे ॥
निराकार तुम हो निर्वाणी । महिमा तुम्हारी वेद न जानी ॥
घट - घट के तुम अंतर्यामी । सिद्ध चोरासी करे परनामी ॥
भस्म अंग गल नांद विराजे । जटा शीश अति सुन्दर साजे ॥
तुम बिन देव और नहीं दूजा । देव मुनिजन करते पूजा ॥
चिदानंद संतन हितकारी । मंगल करण अमंगल हारी ॥
पूरण ब्रह्मा सकल घट वासी । गोरख नाथ सकल प्रकाशी ॥
गोरख गोरख जो कोई धियावे । ब्रह्म रूप के दर्शन पावे ॥
शंकर रूप धर डमरू बाजे । कानन कुंडल सुन्दर साजे ॥
नित्यानंद है नाम तुम्हारा । असुर मार भक्तन रखवारा ॥
अति विशाल है रूप तुम्हारा । सुर नर मुनि जन पावे न पारा ॥
दीनबंधु दीनन हितकारी । हरो पाप हम शरण तुम्हारी ॥
योग युक्ति में हो प्रकाशा । सदा करो संतान तन बासा ॥
प्रात : काल ले नाम तुम्हारा । सिद्धि बढे अरु योग प्रचारा ॥
हठ हठ हठ गोरछ हठीले । मर मर वैरी के कीले ॥
चल चल चल गोरख विकराला । दुश्मन मार करो बेहाला ॥
जय जय जय गोरख अविनाशी । अपने जन की हरो चोरासी ॥

अचल अगम है गोरख योगी | सिद्धि दियो हरो रस भोगी ||
काटो मार्ग यम को तुम आई | तुम बिन मेरा कोन सहाई ||
अजर अमर है तुम्हारी देहा | सनकादिक सब जोरहि नेहा ||
कोटिन रवि सम तेज तुम्हारा | है प्रसिद्ध जगत उजियारा ||
योगी लखे तुम्हारी माया | पार ब्रह्म से ध्यान लगाया ||
ध्यान तुम्हारा जो कोई लावे | अष्ट सिद्धि नव निधि पा जावे ||
शिव गोरख है नाम तुम्हारा | पापी दुष्ट अधम को तारा ||
अगम अगोचर निर्भय नाथा | सदा रहो संतन के साथा ||
शंकर रूप अवतार तुम्हारा | गोपीचंद, भरथरी को तारा ||
सुन लीजो प्रभु अरज हमारी | कृपासिन्धु योगी ब्रहमचारी ||
पूर्ण आस दास की कीजे | सेवक जान ज्ञान को दीजे ||
पतित पवन अधम अधारा | तिनके हेतु तुम लेत अवतारा ||
अखल निरंजन नाम तुम्हारा | अगम पंथ जिन योग प्रचारा ||
जय जय जय गोरख भगवाना | सदा करो भक्तन कल्याना ||
जय जय जय गोरख अविनाशी | सेवा करे सिद्ध चोरासी ||
जो यह पढ़े गोरख चालीसा | होए सिद्ध साक्षी जगदीशा ||
हाथ जोड़कर ध्यान लगावे | और श्रद्धा से भेंट चढ़ावे ||
बारह पाठ पढ़े नित जोई | मनोकामना पूर्ण होई ||